विश्वास से कुछ भी संभव है

एक समय की बात है चंद्रपुर का राजा विजयधर हुआ करता था। उसका विवाह कुछ बहुत ही सुंदर, युवा एवं सुशील स्त्रियों के साथ हुआ था। विद्याधरी, चंद्रमुखी तथा अन्य सभी पटरानी अति सुंदर, सुशील और युवा होने के कारण राजा विजयधर को बहुत प्यारी थीं। लेकिन उन्हीं में एक साधारण रानी भी थी। उसका नाम सुमति था। यद्यपि राजा का प्रेम सभी के लिये समान था तथापि सुमति के लिये चंद्रधर के प्रेम की झलक दिखती नहीं थी। इससे सुमति बहुत दुःख में रहा करती थी।

सुमति विचार मग्न थी। इतने ही में वहाँ एक महात्मा पधारे और उन्होंने भिक्षा माँगी। महात्मा से भिक्षा की बात सुनकर सुमति ने यथोचित भिक्षा से उनका सम्मान किया। सुमति ने महात्मा जी से आशीर्वाद माँगा और उनसे अपने पति का प्रेम पाने के लिये कोई उपाय सुझाने का आग्रह भी किया। उसने रामायण वर्णित यह चौपाई भी कही – पति वियोग सम कोई दुःख नाही। रानी से ऐसा सुनकर महात्मा जी ने उसे अपने पति के अतिरिक्त अन्य सभी ओर से अपना लगाव हटाने का सुझाव दिया। महात्मा जी ने कहा कि वह अपना प्रेम किसी भी प्रकार के आभूषणों तथा खाद्य पदार्थों मे न लगाकर बस दिन–रात अपने पति को ही ध्यावे। महात्मा जी ने और भी कहा कि पति का प्रेम पाने के लिये सुंदर तथा विद्वान होना आवश्यक नहीं, परंतु पति पर बहुत गहरा विश्वास रखना और उसे निश्छल प्रेम करना आवश्यक है। ऐसा कहते हुए उन्होंने अपना उपदेश समाप्त किया।

रानी सुमति ने महात्मा जी की आज्ञा मानते हुए अपने व्यवहार को उनके द्वारा दिये सुझावों के अनुसार ढाला। कुछ समय पश्चात विजयधर तथा रूस के राजा के मध्य युद्ध प्रारंभ हो गया। राजा विजयधर युद्ध में विजयी रहे। रूस की राजधानी विजयधर की हो गयी। राजा ने वहाँ अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया। उन्होंने युद्ध में विजय से प्रसन्न होकर अपनी सभी रानियों को पत्र लिखवाये, और सभी रानियों से पूछा कि क्या वे कुछ भी पसंद की वस्तु मँगवाना चाहती थीं? क्योंकि रूस में अति उत्तम वस्त्र, आभूषण और अन्यान्य सुंदर वस्तुऐं प्रचुरता में उपलब्ध थी। राजा ने सभी रानियों को यह वचन भी दिया कि वे जिस किसी वस्तु के लिये भी इच्छा करेंगी, वह अवश्य ही उन्हें उपलब्ध करा दी जायेगी। राजा द्वारा ऐसा लिखित आश्वासन पाकर सभी रानियों ने बड़ा हर्ष जताया, और अपनी–अपनी इच्छा राजा को लिख दी। परंतु जब सुमति का समय आया तो उसने पृष्ठ पर एक साधारण रेखा खींच दी, क्योंकि पढ़ी लिखी तो अधिक थी नहीं और श्रद्धा राजा के प्रति अपार थी।

सारे ही पत्र राजा को प्राप्त हुए। पत्र पढ़ने वाले ने एक–एक कर सारे पत्र राजा को सुनाने प्रारंभ किये। जब सुमति का पत्र उसके सामने आया तो वह चकित रह गया। ऐसा देखकर राजा ने उसे सुमति के पत्र का शीघ्र वर्णन करने को कहा। तब वाचक ने राजा से कहा कि सुमति ने पत्र में कुछ भी न लिखकर मात्र एक सीधी रेखा खींची है और यह बतलाया है कि उसे मात्र आप ही की आकांक्षा है। यह सुनकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ। राजा ने अपने मंत्री को अपने राज्य की ओर प्रस्थान करने की आज्ञा दी।

अपने राज्य चंद्रपुर पहुँच कर राजा ने सभी पटरानियों को उनकी ऐच्छिक वस्तुऐं प्रदान की तथा स्वयं सुमति के साथ जाने का निर्णय किया क्योंकि सुमति ने राजा से उन्हीं की माँग की थी। जब पटरानियों को राजा के इस निर्णय का ज्ञान हुआ तो उन्हें बहुत दुःख तथा पश्चाताप हुआ। उन्होंने राजा से उनका निर्णय बदलने की प्रार्थना की और क्षमा भी माँगी। परंतु राजा ने उन सभी को यह बताकर समझाने का प्रयास किया कि वे अपने वचन से बंधे हैं और जिस रानी ने जो भी माँगा है वह उसे देना उनका परम कर्तव्य है। राजा ने आगे कहा “आप सभी पटरानियों को वह पाकर, जो कुछ आपने चाहा था, प्रसन्न होना चाहिये। मेरी कामना तो केवल सुमति ने की थी इसलिये मुझे

पाने की अधिकारी तो मात्र वही है"। ऐसा कहकर राजा ने अपने वचन का पालन किया और वह सुमति के साथ अंतःपुर चले गये।

इसप्रकार जो कुछ भी भक्त चाहता है, भगवान उसे अवश्य सुलभ करा देते हैं। जो सांसारिक सुख चाहता है, उसकी गति पटरानियों जैसी होती है और जो भगवान की कामना करता है, उसकी गति सुमति जैसी होती है। अतः सभी को गहरे विश्वास के साथ भगवान की ही कामना करनी चाहिये।

बोलो हर-हर महादेव